देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे श्री गंगा स्त्रोतम

देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे,
त्रिभुवनतारिणि तरलतरंगे,
शंकरमौलिविहारिणि विमले,
मम मतिरास्तां तव पदकमले,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

भागीरथिसुखदायिनि मातस्तव,
जलमहिमा निगमे ख्यातः,
नाहं जाने तव महिमानं,
पाहि कृपामयि मामज्ञानम्,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

हरिपदपाद्यतरंगिणि गंगे,
हिमविधुमुक्ताधवलतरंगे,
दूरीकुरु मम दुष्कृतिभारं,
कुरु कृपया भवसागरपारम्,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

तव जलममलं येन निपीतं,
परमपदं खलु तेन गृहीतम्,
मातर्गंगे त्वयि यो भक्तः,
किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

पतितोद्धारिणि जाह्नवि गंगे,
खंडित गिरिवरमंडित भंगे,
भीष्मजननि हे मुनिवरकन्ये,
पतितनिवारिणि त्रिभुवन धन्ये,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

कल्पलतामिव फलदां लोके,
प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

पारावारविहारिणि गंगे,
विमुखयुवति कृततरलापांगे,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

तव चेन्मातः स्रोतः स्नातः,
पुनरपि जठरे सोपि न जातः,
नरकनिवारिणि जाह्नवि गंगे,
कलुषविनाशिनि महिमोत्तुंगे,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

पुनरसदंगे पुण्यतरंगे जय जय,
जाह्नवि करुणापांगे,
इंद्रमुकुटमणिराजितचरणे,
सुखदे शुभदे भृत्यशरण्ये,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

रोगं शोकं तापं पापं हर मे,
भगवति कुमतिकलापम्,
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे त्वमसि,
गतिर्मम खलु संसारे,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

अलकानंदे परमानंदे कुरु,
करुणामयि कातरवंद्ये,
तव तटनिकटे यस्य निवासः,
खलु वैकुंठे तस्य निवासः,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

वरमिह नीरे कमठो मीनः,
किं वा तीरे शरटः क्षीणः,
अथवाश्वपचो मलिनो दीनस्तव,
न हि दूरे नृपतिकुलीनः,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये,
देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये,
गंगास्तवमिममलं नित्यं,
पठति नरो यः स जयति सत्यम्,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

येषां हृदये गंगा भक्तिस्तेषां,
भवति सदा सुखमुक्तिः,
मधुराकंता पंझटिकाभिः,
परमानंदकलितललिताभिः,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

गंगास्तोत्रमिदं भवसारं,
वांछितफलदं विमलं सारम्,
शंकरसेवक शंकर रचितं,
पठति सुखीः तव इति च समाप्तः,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे,
त्रिभुवनतारिणि तरलतरंगे,
शंकरमौलिविहारिणि विमले,
मम मतिरास्तां तव पदकमले,
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे।bd।

प्रेषक – मालचन्द शर्मा
9166267551

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com